भाकृअनुप-काजरी, जोधपुर में शीतकालीन प्रशिक्षण का हुआ समापन

जोधपुर, 16 मार्च 2026

भाकृअनुप-केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (काजरी), जोधपुर में "शुष्क एवं अर्द्ध-शुष्क क्षेत्रों में सतत कृषि के लिए जैविक एवं प्राकृतिक कृषि प्रणालियों में प्रगति और नवाचार" विषय पर आयोजित 21 दिवसीय शीतकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन समारोह आयोजित किया गया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम 24 फरवरी से 16 मार्च 2026 तक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की मानव संसाधन विकास पहल के अंतर्गत आयोजित किया गया, जिसका उद्देश्य सतत कृषि के क्षेत्र में कार्यरत वैज्ञानिकों एवं विस्तार विशेषज्ञों की वैज्ञानिक समझ और कार्यकुशलता को सुदृढ़ करना था।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में देश के विभिन्न राज्य कृषि विश्वविद्यालयों तथा अन्य कृषि संगठनों से आए वैज्ञानिकों, शिक्षाविदों और कृषि विस्तार विशेषज्ञों ने भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों को जैविक एवं प्राकृतिक कृषि, मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन, जैविक पोषक तत्व प्रबंधन, जैव-इनपुट्स, फसल विविधीकरण तथा सतत कृषि प्रणालियों से संबंधित नवीन वैज्ञानिक जानकारियों से अवगत कराया गया।

समापन समारोह में कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान (अटारी), जोधपुर के निदेशक डॉ. जे. पी. मिश्रा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे, जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता काजरी, जोधपुर के निदेशक डॉ. सुरेश पाल सिंह तँवर ने की। इस अवसर पर शीतकालीन प्रशिक्षण के लिए तैयार किए गए प्रशिक्षण संकलन (कम्पेंडियम) का विमोचन भी किया गया।

अपने संबोधन में डॉ. जे. पी. मिश्रा ने कहा कि कृषि की दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए जैविक और प्राकृतिक कृषि प्रणालियों का महत्व निरंतर बढ़ रहा है। उन्होंने बताया कि विशेष रूप से शुष्क और अर्द्ध-शुष्क क्षेत्रों में संसाधन-संरक्षण आधारित और जलवायु-अनुकूल कृषि पद्धतियों को अपनाना समय की आवश्यकता है। इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम वैज्ञानिकों और विस्तार विशेषज्ञों को किसानों के बीच सतत कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक ज्ञान और अनुभव प्रदान करते हैं।

अध्यक्षीय उद्‌बोधन में डॉ. तंवर ने कहा कि सतत कृषि पद्धतियाँ जैसे जैविक एवं प्राकृतिक खेती आज वैश्विक स्तर पर पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने और कृषि की स्थिरता बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण मानी जा रही हैं। उन्होंने बताया कि काजरी शुष्क क्षेत्रों के लिए स्थान-विशिष्ट कृषि तकनीकों के विकास पर कार्य कर रहा है और इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से इन तकनीकों और नवाचारों को देशभर के वैज्ञानिकों एवं विस्तार कर्मियों तक पहुँचाया जा रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि सतत कृषि के लिए संस्थानों द्‌वारा किए जा रहे अनुसंधान और किसानों के नवाचारों को प्रोत्साहित करना आवश्यक है।

इससे पूर्व डॉ. धीरज सिंह ने अतिथियों, वैज्ञानिकों और प्रतिभागियों का स्वागत किया, जबकि पाठ्यक्रम निदेशक डॉ. एन. के. जाट ने शीतकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम का संक्षिप्त प्रतिवेदन प्रस्तुत किया और कार्यक्रम की प्रमुख गतिविधियों की जानकारी दी।

यह प्रशिक्षण कार्यक्रम ज्ञान के आदान-प्रदान, वैज्ञानिक सहयोग और क्षमता निर्माण के लिए एक महत्वपूर्ण मंच साबित हुआ, जिससे देश में जैविक एवं प्राकृतिक कृषि प्रणालियों के प्रसार तथा सतत कृषि को बढ़ावा देने में सहायता मिलेगी। कार्यक्रम का समापन सह- पाठ्यक्रम निदेशक डॉ. आनंदकुमार नाओरेम द्‌वारा प्रस्तुत धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।